जय राम जय राम

सत्य साहित्य

जय जय राम

वर्ष 1 / अंक 3
जनवरी 2017
Year 1/ Vol 3
January 2017

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

सर्वशक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः

भजन मन रामं महा अभिरामम् ।
अस्ति भाति सच्चिद् प्रिय स्वरूपम्
त्रिगुणातीतं चैतन्यरूपम्,
जगदाधारं जगद्विरामम् ॥१॥
शान्तिमयं पुरुषोत्तमं ईशम्,
भक्त वत्सलं श्री जगदीशम्,
पूर्ण पुरुषं पूर्ण कामम् ॥२॥

(परम पूजनीय श्री स्वामी सत्यानंद जी महाराज की भजन डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- नव वर्ष की शुभकामनाएँ
- God's Nature : Ram is Bliss
- परम पूजनीय स्वामी जी महाराज के संस्मरण
- परम पूजनीय प्रेम जी महाराज के श्री मुख से
- 'ईश्वर का स्वभाव'(2): परम पूजनीय महाराज जी
- विराट-योग
- अनुभूतियाँ
- विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम
- कैलेंडर
- बच्चों के लिए

सत्य साहित्य
मूल्य (Price) ₹ 5

नव वर्ष की शुभ कामनाएँ

God's Grace, I am very well.
Wish you all a very bright & joyous new year. Jai Jai Ram & all love.
May Prabhu Ram bless all with purity of thoughts, words & deeds through repetition of Ram Naam incessantly.

Have a great new year.

2.1.2004

परमेश्वर कृपा, मैं कुशलपूर्वक हूँ, आप सभी को उज्ज्वल और आनन्दमयी नव वर्ष की शुभ कामनाएँ। सप्रेम जय जय राम। प्रभु राम आप सभी को राम नाम के निरन्तर जाप से विचार, वाणी और कर्म की शुचिता दें। नव वर्ष मंगलमय हो।

Wishing you a joyous new year — an year of great achievements.
May you be blessed with His Grace ever in life.
May you ever prosper.

Loving Jai Jai Ram.

16.1.2006

नव वर्ष आनन्दमय हो। महान उपलब्धियों का वर्ष हो। प्रभु राम की कृपा सदैव आपके जीवन में बनी रहे। आप सदैव उन्नति करें। सप्रेम जय जय राम

Loving namaskar from all of us here.
Best wishes for a prosperous new year. May we all become good sadhakas.

3.11.2005

हम सभी की ओर से सप्रेम नमस्कार। नव वर्ष आपके लिए सौभाग्यशाली हो। प्रभु कृपा से हम सभी अच्छे साधक बनें।

'God's Nature : Ram is Bliss'

सत्यानन्द

Supremely Pure inherently, Spirit Omniscient.
Perfect Incomparable, Lord Excessively Radiant.

In His Self-existence, the God who is Complete.
He Alone is Eternally Happy, Almighty Purity Replete.

Absolute Pure Consciousness, Bliss Unalloyed.
Supreme Soul and Being is, Beautiful Fountainhead of Joy.

Free from discrimination and delusion, ever Unbounded Intelligence.
Pure Self-awareness is, Supreme Bliss in essence.

Ram is the Eternal Constant, Existence Infinite.
Omniscient Blissful Lord, so say saints erudite.

Finite matter is incognizant, to damage flaws subject.
Time plays havoc with it, tragic loss expect.

Attachment aversion sprout there, many a mental vice.
Fallacy delusion dwell there, quarrel anger artifice.

Pure Beginningless Endless, Glorious Consciousness.
Is Supreme Source of Bliss, Repository of Happiness.

Pleasure derived from sense objects, are all but transitory.
All sensual enjoyment is, short-lived momentary.

Occasions of pleasure and pain, alternatively come and go.
All enjoyment insipid becomes, fun frolic sorrow.

Grand spiritual consciousness, beyond objects of sense.
Is complete in itself, happiness immense.

Happiness is pure equipoise, independently self-exists.
Even-minded Dispassionate, Ram is Perfect Bliss.

Innately joyful and calm, happy peaceful allayed.
In this very pure state, does bliss pervade.

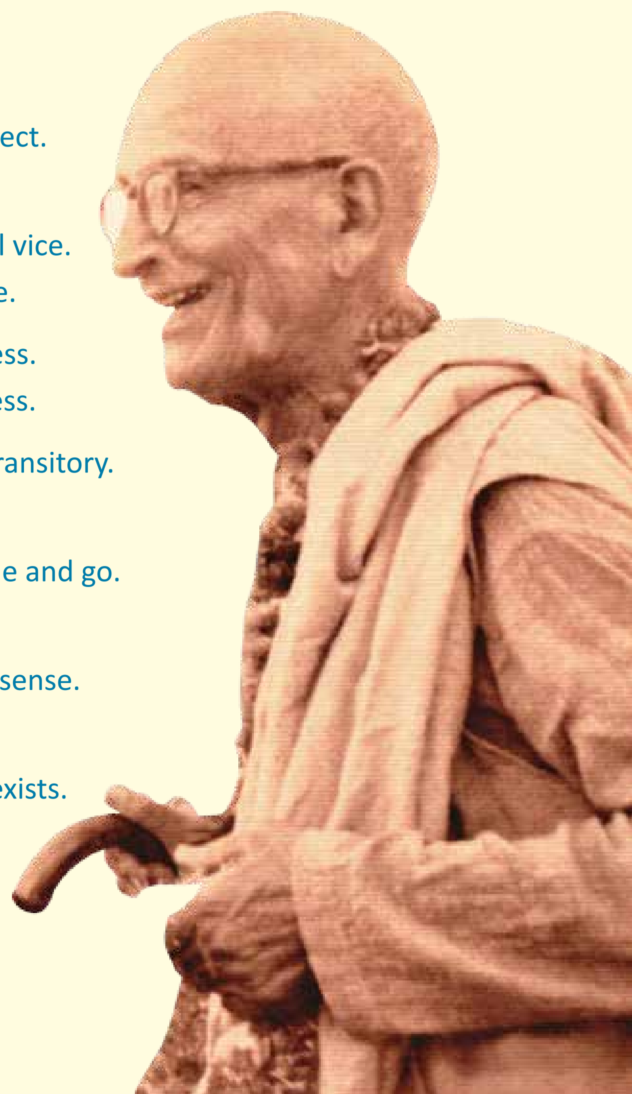

Attachment aversion cause duality, so say the wise.
Arises from modes of nature, so the erudite apprise.

All suffering and ignorance, in opposite extremes bide.
Possibility of fear and delusion, sin also abide.

In the lake of the mind, the gusts of extremity.
Stir up violent waves of, physical and mental infirmity.

Beginningless Eternal Happiness, which modes of nature surpass .
In that state all dualities, forever away they pass.

Existence Calm and Unchanging, Consciousness Supreme.
Pure Beginningless Endless, Equipoise Serene.

Calm peaceful monist abode, Ram is Serenity Sea.
Free from opposites and extremes, modes of nature three.

That evenness which forever abides, is blissful Almighty.
Auspicious Fountainhead of Joy is, the Eternal Reality.

*(यह अंश मूलतः 'ईश्वर स्वरुप : राम आनन्द स्वरुप है', **भक्ति–प्रकाश**, पृष्ठ 107–109 से अनुवादित है)*

परम पूजनीय स्वामी जी महाराज के संस्मरण

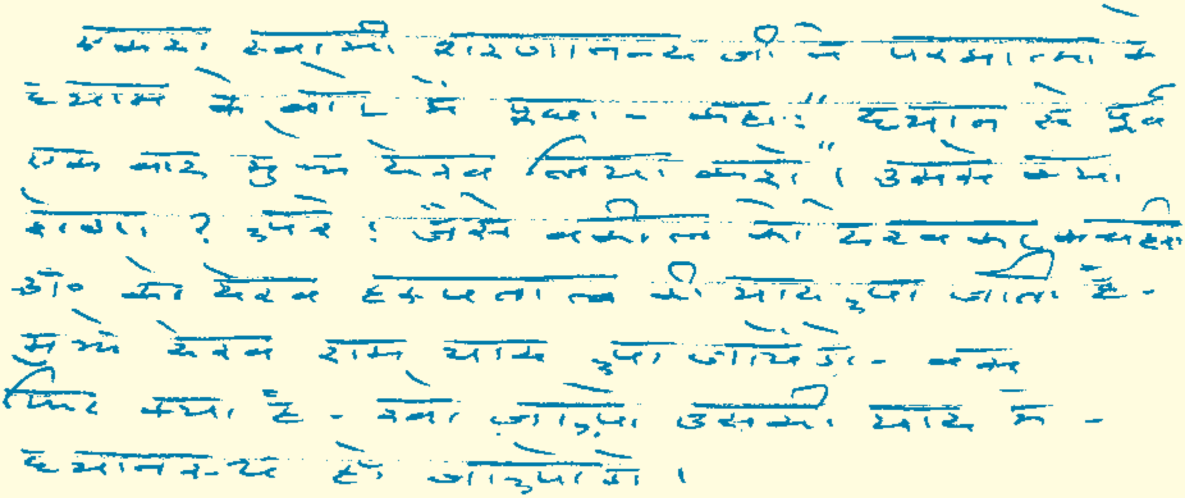

(परम पूजनीय महाराज जी की डायरी से)

'श्री राम कृपा के पात्र कैसे बने ?'

प्रेम

एक रविवार को ऐसा सोचा कि आज महाराज जी से कुछ बातें पूछूँगा। उसी दिन आखिरी पाँच मिनट में पूज्य श्री महाराज जी ने फरमाया, उन्हीं के श्रीमुख वाक्य हैं:

ईश्वर की कृपा मांगने वाले को वैर विरोध नहीं रखना चाहिए। अगर दूसरा कोई बात कहता है तो उस का बुरा मानना या उसके आगे वैसे ही जवाब देना तो राम भक्त का काम नहीं। उसका काम तो केवल उसको सुनना और ignore (इगनोर) करना ही है। जितनी किसी में समझ होती है उतनी ही तथा वैसी ही वह बात कर देता है, उसका क्या कसूर है ? यही होना चाहिए कि उसको समझा दिया जाए।

ईश्वर की कृपा माँगने वाले को यह सब छोड़ना चाहिए, लोग हरिद्वार में जाते हैं तो वहां पंडित लोग कुछ न कुछ छोड़ने को कहते हैं। एक मेरे मित्र मुझसे कहने लगे,''मुझे आम सबसे प्यारा है और मैंने हरिद्वार जाकर यह छोड़ दिया है।'' आम छोड़ने से क्या लाभ? या कोई भी खाने वाली वस्तु छोड़ने से क्या लाभ, जो सेहत के लिए अच्छी है। अगर छोड़ना है तो गुस्सा छोड़ो, वैर विरोध छोड़ो। यहाँ जो भी श्रीरामशरणम् आते हैं, उनको ऐसे ही बुराइयाँ छोड़ कर श्री राम कृपा के पात्र बनना चाहिए।

श्री राम तेरी कृपा हो, कृपा हो।

(परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज जी के श्रीमुख से, 23 जून 1968 श्रीरामशरणम् दिल्ली। परम पूजनीय महाराज जी की डायरी से) ■

'ईश्वर का स्वभाव' (भाग 2)

विश्वामित्र

भगवान् के और स्वभाव किस प्रकार के हैं, कितने सुन्दर स्वभाव हैं, प्रभु के प्रति कितना प्यार उमड़ता है, मात्र स्वभाव के पता चलने से। जिस किसी भी सज्जन को स्वभाव पता लग जाता है, उसका जन्म तो कृतकृत्य हो जाता है। परमब्रह्म परमात्मा के कृपा स्वरुप को राम कहा जाता है, तो उन्हीं के प्रेम स्वरुप को कृष्ण कहा जाता है। दोनों एक ही के नाम हैं। आज के दिन जिस किसी व्यक्ति पर परमेश्वर की कृपा हो जाया करती है, उस के कृपा स्वरुप की कृपा हो जाती है, उसी के अन्तःकरण में उसी के घर में प्रेम स्वरुप श्री कृष्ण प्रकट हुआ करते हैं अर्थात् उसी के हृदय में भगवत् प्रेम जिसे Divine love कहा जाता है, अवतरित होता है। दिव्य प्रेम का अवतरित होना, अपने हृदय में प्रकट होना, ही साधक एवं भक्त को भगवान् श्री कृष्ण का अवतार या प्रकटन समझना चाहिए। देवकी के घर हुए, यशोदा के घर हुए, कौशल्या के घर हुए। परमेश्वर करे, कभी ऐसा अवसर आए, किसी जन्म में हमारे अन्तःकरण में भी प्रकट हों, ऐसी कृपा करें परमात्म देव।

ये प्रेम तो बड़ा अगाध है, असीम है, इसे समझना अति दुष्कर। कुछ एक लघु कथाओं, कुछ एक दृष्टांतों से शायद थोड़ी बहुत इस प्रेम के बारे में समझ आ जाए। इस दिव्य प्रेम को दो शरीरों का प्रेम नहीं कहा जाता, दो शरीरों का प्रेम इस दिव्य परिभाषा के अन्दर नहीं उतरता। यह तो दिव्य प्रेम है, दिव्यता माध्यम है जिस प्रेम की उसे ही दिव्य प्रेम कहा जाता है। यह प्रेम वह है, जो दो को मिला कर एक कर दे। प्रियतम प्रेमिका को एक कर दे, उसे प्रेम कहा जाता है। दो शरीर तो एक हो नहीं सकते, इसलिए वह काम है, स्वार्थ है। दिव्य–प्रेम तो उस प्रेम का नाम है जहाँ एकत्व आ जाता है। जहाँ अभिन्नता आ जाती है। जहाँ अद्वैत आ जाता है। इस प्रेम में विस्मरण नहीं है। आप कहें हम प्रेम भी करते हैं परमात्मा से और हमें संसार याद आता है, तो इसका अर्थ है, यह प्रेम पूर्ण नहीं है। दिव्य–प्रेम में परमात्मा का विस्मरण नहीं है। हर

वक्त उस का स्मरण बना रहता है। मातेश्वरी राधा की याद आती है:

राधा रानी के पास श्याम सुन्दर बैठे हैं, राधा रानी कुछ छुपा रही है, भगवान् उनके हाथ को पकड़ कर कहते हैं, ''क्या बात है राधे क्या छुपा रही हो ?" "कुछ नहीं।" "कुछ तो है।" हाथ पकड़ कर देखा अंगुली पर थोड़ी सी चोट लगी हुई है। कान्हा पूछते हैं– ''पुरानी है?'' "हाँ पुरानी है।" "पर लग तो नई रही है।" राधा रानी कहती हैं, "कान्हा! जैसे ठीक होने लगती है इसे पुनः छील देती हूँ, ताकि मुझे नित्य नवीन दिखाई देती रहे।" "क्यों ?" "ये आपके नाखुन से लगी हुई है।" प्रेम में विस्मरण नहीं है। एक प्रेमिका नित्य चाहती है, स्वप्न में भी मेरा प्रियत्तम बिसरे न। वह साधन ढूँढती है, किस प्रकार से परमेश्वर का स्मरण बना रहे।

एक गोपी के दृष्टांत से इसकी पराकाष्ठा की अनुभूति होती है। देवर्षि नारद, आज आकाश से चलते हुए जा रहे हैं। एक गोपी जो भगवान् को भूलाना चाहती है, सोचो कितनी याद होगी उसके अंदर, जो भगवान् को भुलाना चाहती है। नारद जी के मन में आया आज बृज की यात्रा की जाये। बहुत दिनों से गोपियों की चरण रज माथे पर नहीं लगाई। उनकी चरण धूलि माथे पर लगाते हैं। नीचे उतरते हैं, क्या देखते हैं, यमुना जी के किनारे एक गोपी, एक सखी बैठी हुई है। ध्यानस्थ, रीढ़ की हड्डी बिल्कुल सीधी करी हुई, आँखें बंद, भृकुटी स्थान पर ध्यान लगाया हुआ। पास ही पानी का बरतन खाली उल्टा पड़ा हुआ है। बड़े आश्चर्य में हैं, वीणा की झंकार की, आँख खुली, प्रणाम हुआ पूछते हैं, "क्या कर रही है तू? बृज में यमुना जी के किनारे कोई गोपी ध्यानस्थ, तू योगिनी कहाँ से आ गई ? यह तो प्रेम भूमि है। भक्ति भूमि है, यहाँ ध्यान लगाने वाली कहाँ से आ गई ?" गोपी कहती है, "देवर्षि नारद ! ध्यान कहाँ लगा रही हूँ, ध्यान थोड़े ही लगा रही हूँ, ध्यान लगा भी रही हूँ तो उसे याद करने के लिये नहीं, उसे भुलाने के लिये ध्यान लगा रही हूँ।" "क्यों ?" ऐसी बात तो मैं पहली बार सुन रहा हूँ, क्या बात है ? सुनो देवर्षि मेरी हालत– "घर अपना पोछा इत्यादि लगाती हूँ, लीपन करती हूँ, मुझे यह मयूर मुकटी आता दिखता है, मेरा सारा पोछा खराब कर देता है। दूध दोहने लगती हूँ तो मेरी चोटी पकड़ लेता है, कहता है दूध की धार मेरे मुँह में मार। मैं दूध की धार इस तरफ करती हूँ, तो देखती हूँ सारा का सारा दूध भूमि पर बिखरा पड़ा है। धान कूटने लगती हूँ तो मूसल पकड़ लेता है। धान कूटने नहीं देता। आज जल भरने आ रही थी तो रास्ते में मेरा रास्ता रोक लिया है, मेरे आगे मटक मटक कर चल रहा था। बड़ी मुश्किल से यहां पहुंची हूँ। देखो न! मन का भ्रम है, वह आया थोड़ी है, वह कुछ ऐसे करता थोड़ी है, वह मूसल पकड़ता थोड़ी है, यह मेरा भ्रम है। जिस मन में वह इतना गहन, गम्भीरता से बसा हुआ है, उसी मन से मैं उसे निकालने का प्रयत्न कर रही हूँ।" देवर्षि की आँखों में आँसू आ गये। यति, सती, महात्मा, ऋषि, मुनि, यम, नियम करके, प्रत्याहार करके, प्राणायाम का पालन करके, धारणा, ध्यान का पालन करके, अनेक जन्मों

तक जो इस प्रकार का प्रयत्न कर रहे हैं, उस मयूर मुकटी की एक क्षण के लिए छवि हमारे सामने आ जाए। उस छवि को यह गोपी अपने मन से निकालना चाहती है ? उस मयूर मुकटी को देखो, उसका प्रेम देखो, फैसला कर चुका है हृदय से तू जितना मरजी निकाल मुझे, मैं निकलने वाला नहीं हूँ।

प्रेम तो उसी को कहते हैं, जो प्रेमी एवं प्रेमिका को एक कर दे। ललिता ने एक दिन राधा रानी से पूछा–"राधे! कृष्ण से तेरा क्या सम्बन्ध है?" बड़ी private बात, बड़ी गोपनीय बात, कोई अच्छी सखी, सच्ची सखी ही यह बात पूछ सकती है। ललिता तो आप जानते हैं बड़ी प्रिय सखी, जन्मों जन्मों का साथ राधा एवं ललिता का। हिम्मत करके पूछती है, "राधे बता न।" राधा कहती, "ललिता संबंध कोई लक्ष्य थोड़ी है, यह तो प्रेम का एक साधन है। साध्य नहीं है यह। साध्य तो प्रेम ही है। संबंध जो कुछ भी बनता है वह तो साधन है प्रेम का। तू बता मेरा और कृष्ण का क्या सम्बंध है?" "मुझे लगता है तू उसकी प्रियतमा और वह तेरा प्रियतम है।" राधा कहती है, "यह तो ऊपरी बात है, तू ऊपरी बात ही देख सकती है। तुझे वास्तविकता दिखाई नहीं दे रही।" ललिता कहती है, "अच्छा तू ही बता।" राधा कहती, "न वह प्रियतम, न मैं उस की प्रियतमा, दोनों के मन में एक तीव्र आकांक्षा जागी। एक दूसरे को मिलने की, इस दिव्य आकांक्षा ने दोनों को मसल कर एक कर दिया, मन ही नहीं रहा तो पृथकत्व कैसे रहेगा, भिन्नता कैसे रहेगी। अलगत्व कैसे रहेगा। मन ही एक हो गए। न मैं राधा न वह कृष्ण, न मैं प्रियतमा न वह प्रियतम। दिव्य प्रेम उसी को कहा जाता है, जो दोनों को मिलाकर एक कर दे। एक बड़े भेद की बात है – शिष्य एवं गुरु का मन जब एक हो जाता है तो वह इतना बलवान हो जाता है कि वह सर्वसमर्थ, सर्वशक्तिमय परमात्मा को अपनी ओर, अपने भीतर खींचने में समर्थ हो जाता है।

शिष्य एवं गुरु का मन जब एक हो जाता है तो वह इतना बलवान हो जाता है कि वह सर्वसमर्थ, सर्वशक्तिमय परमात्मा को अपनी ओर, अपने भीतर खींचने में समर्थ हो जाता है।

आज एक सखी राधा रानी से एक और गम्भीर प्रश्न पूछ रही है, "राधे ! बता तू श्याम सुन्दर से अधिक प्रेम करती है या श्याम सुन्दर तेरे से अधिक प्रेम करते हैं?" राधा रानी कहती हैं एक पद से इस का उत्तर देती हूँ। राधा रानी कहती हैं,

'जोई जोई करे प्रियत्तम
सोई सोई मोहे भावे।''

यही तो मैं कह रही हूँ तेरा प्रेम श्याम सुन्दर पर बहुत है। क्यों इसलिए प्रियतमा को प्रियतम की हर बात बहुत अच्छी लगती है। अरी आगे सुन तो

''जोई जोई करे प्यारो साई सोई मोहे भावे''।
''जोई जोई मोहे भावे, साई सोई करे प्यारो''।।

संत महात्मा कहते नहीं अघाते कि ईश्वर सर्वविद्यमान है, परम दयालु है, परम कृपालु है। करुणा का सागर है, कृपा का समुद्र है,

हर एक के घट में विराजमान है। पर यह भी सत्य है कि उसके होते हुए भी संसार में दुःख भरा हुआ है, तो उसकी दयालुता, उसकी करुणा किस काम की ? यदि हर व्यक्ति, दुःखी दिखाई दे रहा है। उसकी कृपालुता पर, उसकी करुणा पर, उसकी क्षमा पर, उसके प्रेम स्वरुप पर प्रश्न चिन्ह आते हैं। इतना दुःख है कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जो अपने आपको निरोग कह सके। छोटे बच्चे से ले कर बजुर्ग तक देख लीजिए, देश देखिए, विदेश देखिए, कोई व्यक्ति अपने आपको रोग मुक्त नहीं कह सकता। ऐसा भी कोई व्यक्ति नहीं जो अपने आप को दुःख मुक्त कह सके कि मेरे जीवन में दुःख नहीं है। असहाय अबलाओं पर नित्य अत्याचार हो रहे हैं, क्या वह सर्वज्ञ, सर्वविद्यमान परमात्मा, अति करुणावान, संवेदनशील परमात्मा इस चीज़ को नहीं देख रहा ? यदि देख रहा है, और कुछ कर नहीं सकता तो हमारे किस काम का? प्रश्न चिन्ह उसकी सर्वज्ञता पर, करुणा, क्षमा, दयालुता के प्रति उठते हैं। यह कहें उसका विधान बड़ा मंगलमय है। संदेह किसी बात का नहीं, ये सब शास्त्र सम्मत बातें है, अनुभूत बातें हैं, परखी हुई हैं, तभी उन का वर्णन है। उसका विधान कैसा मंगलमय है? एक बम गिरता है, संसार का काफी हिस्सा भस्मीभूत कर देता है। विधान मंगलमय है या विनाशकारी? यदि ये कहें कि यह अपने अपने कर्मों का फल है, हर बात सत्य है। हर कोई अपने कर्मों का फल भोगता है और कहा जाए कि परमात्मा हमें हमारे कर्मों के अनुसार संचालन ही करने योग्य है, इसके अतिरिक्त कुछ नहीं है। उसकी दया, करुणा, क्षमा किस काम की ? क्या उसे हमारे कर्मों के अनुसार ही हमें चलाना है, हमारा संचालन करना है ? संत जन जो कहते हैं वह बिल्कुल सत्य है। सृष्टि का होना, सृष्टि का प्रलय होना, ये दोनों बातें उसकी प्रेरणा से, मानों जन्मते है तो भी उसकी प्रेरणा से और मरते हैं तो उसकी प्रेरणा से । सृष्टि के प्रलय से उसे कोई फरक नहीं पड़ता, कोई मर रहा रहा है या जी रहा है। वह दृष्टा बन कर एक स्थान पर बैठा हुआ देख रहा है, कुछ कर नहीं रहा । आप उसे कुछ करने के लिए पुकारते ही नहीं। स्वभाव परमात्मा का ध्यान दीजिएगा हर चीज़ वह जानता है, हर चीज़ वह कर सकता है, सर्व समर्थ है तो वह दृष्टा बन देखता रहता है, कुछ करता नहीं है। गज ने पुकारा, गरुड़ की सवारी करके आए, परमेश्वर को लगा यह आहिस्ता चलता है, स्वयं कूद कर सरोवर में चले गये प्रभु। गज ने पुकारा और वे आए। पुकार के लिये एक जरुरी बात ध्यान रखने योग्य है। उस से अपने दुःखों का निवारण करवाना चाहते हो तो उसे इस गुण से संबोधित करो। सुख पाना चाहते हो तो उसे इस गुण से संबोधित करो, यदि आप कहते रहोगे मर्यादा पुरुषोत्तम हो, मरते हो मर जाओगे वह आपके दुःख हरण नहीं करेगा। बाली से यही भूल हो गई, बाली तीर खाकर घायल, मरने को तैयार है। भगवान् उस के पास जाते हैं, आपस में बातचीत होती है। तुम मुझे समझते क्या हो''? मैं तो यही समझता था आप मर्यादा का पालन करने वाले हो। भगवान् कहते, "ठीक है फिर वही तो किया है, जो अपराधी है उसे दण्डित करना मेरा

कर्तव्य है।" यदि उस वक्त भी बाली की मति ठीक हुई होती, बाली ने कुछ और कहा होता। सब कुछ सुनने के बाद भगवान् का हृदय द्रवित हो गया, ऐसा लगता है भगवान् सब कुछ जानता हुआ भी भूला हुआ है। जब तक आप याद नहीं करवाते – परमात्मा आप ये करने योग्य हो मेरे ऊपर मुसीबत आई है इस का हनन कर दीजिए, तब तक दृष्टा बना रहेगा। आप दु:खी हो, आप के प्राणों की रक्षा करनी है, आप प्राण रक्षक कह के पुकारते हो, आपने अमुक का प्राण बचाया, मेरे भी तो अब प्राण बचाओ, तो आप की पुकार सुने बिना नहीं रहेगा। एक ही भाषा जानता है, जो हृदय से निकलती है, सच्ची होनी चाहिए और सही होनी चाहिए। दो बातें पुकार के लिये याद रखें। सच्ची पुकार हो, अधूरी नहीं, झूठी नहीं, कपटी नहीं और सही होनी चाहिए। जो काम करवाना है तदनुसार परमेश्वर को पुकारिएगा। पुकारने पर आता है।

एक ही भाषा जानता है, जो हृदय से निकलती है, सच्ची होनी चाहिये और सही होनी चाहिये। दो बातें पुकार के लिये याद रखें। सच्ची पुकार हो, अधूरी नहीं, झूठी नहीं, कपटी नहीं और सही होनी चाहिये। जो काम करवाना है तदनुसार परमेश्वर को पुकारियेगा। पुकारने पर आता है।

अब बिन पुकारे, जब पुकार न हो तो कैसे आता है ? आप देखिए अघासुर आ गया है, गोप बाल देखते हैं ये बड़ी रमणीक सी गुफा लगती है, घुसना शुरु कर देते हैं। यह अजगर का रुप धारण किये हुए है, किसी ने कहा अरे! मत घुसो इसमें। कहीं अजगर हुआ तो? तो उन्होंने कहा हमारा कन्हुआ किस लिए है, भगवान् श्री कृष्ण को कन्हुआ कह रहे हैं। वह हमें बचाएगा, जैसे ही प्रवेश करते हैं सब के सब मूर्छित हो गये। क्या कन्हैया उन्हें बचाता नहीं? कोई गोप बाल मरने दिया? सब की मूर्छा सही हो गई। किसी को मरने नहीं दिया। कब? जब लोग यह समझते हैं हम परमात्मा के हैं और परमात्मा हमारा है।

एक और स्वभाव है, परमात्मा अधूरा स्वीकार नहीं करते। अपने आप को पूरा देते हैं, तो आपसे भी पूरे की ही अपेक्षा रखते हैं, अधूरा नहीं। ऐसा नहीं मन्दिर में बैठ कर तो "मैं तेरा राम" और बाहर निकलते ही, मैं पत्नी का पति, पुत्र का पिता इत्यादि।" यह धोखा धड़ी है परमात्मा अनसुनी कर देता है। बेहतर यही है अपने आपको पूर्णतया उसकी चरण शरण में समर्पित कर दो। बस आप पूरे के पूरे, देखो न एक व्यक्ति ने छोटी सी गड़वी ली, घड़ा समझ लें और सोचे उस में स्वयं समुद्र भर जाये तो सम्भव नहीं। क्या करना चाहिए? स्वयं ही समुद्र के पास चले जाना चाहिए। समुद्र से अपने आप सब कुछ भर जाता है। परमेश्वर अपने आप को पूर्ण देता है तो आपसे भी पूर्णता की अपेक्षा रखता है, आप भी मेरे पास पूर्ण ही आओ।

(परम पूजनीय श्री महाराज जी के इस लेख का पहला भाग 'सत्य साहित्य', अक्तूबर 2016 में प्रकाशित हो चुका है।)

स्वामी जी महाराज का विराट योग

परम पूजनीय स्वामी जी महाराज ने 'भक्ति–प्रकाश' में विराट योग का वर्णन किया है। राम नाम का सिमरन करते हुए अपने सभी कर्त्तव्यों का पालन करते रहना विराट योग है।

- मुख में राम हाथ में काम
- राम–राम भजकर श्रीराम। करिये नित्य ही उत्तम काम।।
- सिमरन और सेवा
- स्मरण और युद्ध

ये सब विराट योग के अन्तर्गत हैं।

परम पूजनीय स्वामी जी के अनुसार–

हरि को सिमरो ध्यान से, चलते–फिरते बाट।
काम–काज में सिमरिये, सुखकर योग विराट।।
योग रीति यह सुगम है, फल है परम अपार।
अति विश्वास का काम है, श्रद्धा की है कार।।

(भक्ति प्रकाश, आधार शुद्धि, 165/34–35)

साधक मार्ग में चलते फिरते एवं काम काज करते हुए, ध्यानपूर्वक परमात्मा का सिमरन करे। सिमरन का अर्थ है कि परमात्मा सर्वत्र विद्यमान है, यह अनुभूति निरन्तर बनी रहे। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को विराट रूप का दर्शन कराके, यही संदेश दिया था, कि कण–कण में 'मैं' ही हूँ। श्री स्वामी जी महाराज हमें सरल विराट योग में यही संदेश दे रहे हैं, कि अपनी प्रत्येक गतिविधि में परमात्मा को शामिल मानकर काम करेंगे, तो परमात्मा से सतत् योग बना रहेगा। अतः परमात्मा का कभी भी विस्मरण न हो। यह सुखकारी विराट योग है। परमात्मा–मिलन की यह सरलतम विधि है और इसका फल अपरम्पार है। यह साधन अति विश्वास एवं श्रद्धा का मार्ग है। अतः आत्म–कल्याण का यह सरलतम पथ विराट योग है।

कर्म करो त्यों जगत के, धुन में धारे राम।
हाथ पाँव से काम हो, मुख में मधुमय नाम।।
एक पंथ दो काज यों, होवें निश्चय जान,
भक्ति धर्म का मर्म है, योग युक्ति ले मान।।

(भक्ति प्रकाश, कुण्डलिनी प्रबोध 165/4,5)

जगत के सभी कर्म करते हुए राम–राम की धुन लगी रहे। हाथ–पाँव से कार्य करते हुए भी मुख में मधुर राम–नाम का जप होता रहे। इस प्रकार निश्चय से एक पंथ, दो कार्य होते जाते हैं। इसे ही भक्ति धर्म का रहस्य एवं आत्म–परमात्म मिलन की सुगमतम रीति समझिये। 'मुख में राम हाथ में काम' यह स्वामी जी महाराज का विराट योग है।

राम राम भजकर श्रीराम,
करिये नित्य ही उत्तम काम।
जितने कर्त्तव्य कर्म कलाप,
करिये राम राम कर जाप।।

करिये गमनागम के काल,
राम जाप जो करता निहाल।
सोते जगते सब दिन याम,
जपिये राम राम अभिराम।।

(अमृतवाणी, 22)

सिमरन और सेवा का यह उत्तम व्यवहारिक रूप है।

भगवान श्रीकृष्ण का अमर संदेश–**'हे अर्जुन, सब समय में तू मुझे स्मरण कर और युद्ध कर। (अर्थात् नाम स्मरण करते हुए सभी कर्त्तव्य कर्मों का पालन करता चल) इस प्रकार मन और बुद्धि मुझमें अर्पित किये हुए संदेह रहित, तू मुझको ही प्राप्त कर लेगा।'**

(श्रीमद्भगवद्गीता, 8/7)

यही स्वामी जी महाराज का विराट योग है।

इस प्रकार साधक विराट योग का नित्य पालन करता रहे तो अन्तकाल में उसकी मति

सुधर जाती है, वह शुभ गति को प्राप्त हो जाता है। **'अन्तकाल में जिसकी मति सुधर जाये उसकी गति सुधर जाती है। मति को सुधारने का सबसे सुगम साधन नाम स्मरण और नाम–ध्यान है।'**

(श्रीमद्भगवद्गीता, 8/9–10)

अन्तकाल जो जन जपे, जन्म जीत वह जाय।
वेदागम का मर्म है, समझो निश्चय लाय।।

(भक्ति प्रकाश, नाम महिमा 60/17)

'हे देहधारियों में श्रेष्ठ, यहाँ देह में (प्राणियों में) शुभ कर्म रूप यज्ञ का अधिष्ठाता मैं हूँ और अन्तकाल में जो मनुष्य, मुझे ही स्मरण करता हुआ देह को त्यागता है वह मेरे स्वरूप को प्राप्त होता है। इसमें कोई भी संशय नहीं।'
(श्रीमद्भगवद्गीता, 8/5)

साधक नित्य निरंतर नियमपूर्वक नाम जप व ध्यान का अभ्यास करता रहे, तो अन्त समय में उक्त अवस्था को प्राप्त हो जाता है। साधना करने की यह विधि ही विराट योग है। विराट योग साधकों के लिए श्री स्वामी जी महाराज की सरलतम एवं श्रेष्ठतम पद्धति है। साधक गृहस्थ धर्म का भली भांति पालन करते हुए अपने जीवन में इस पद्धति को अपनाकर अपना कल्याण कर सकता है।

(एक वरिष्ठ साधक)

■

अनुभूति

'गुरुदेव अन्त समय हुए सहाई'

आज से लगभग दो वर्ष पहले अचानक मेरे पति का last stage cancer diagnose हुआ। हम सब परिवार के सदस्य बहुत दुःखी हुए । डॉ ने भी जवाब दे दिया जितनी सेवा कर सकते हो करो। धीरे धीरे मेरे पति की आवाज़ भी बहुत कम हो गई। सभी ने उन के लिए राम नाम जपना आरम्भ कर दिया। उन्हें 31 दिसम्बर रात को श्रीरामशरणम् में लेकर आए।

एक दिन धीमी आवाज़ में उन्होंने बताया कि मैं पूरी नींद में नहीं था, गुरुदेव मेरे पास आए, मैंने हाथ जोड़ कर कहा,'' कि मुझे इस चक्कर से छुड़ाओ।'' महाराज जी ने कहा,'' अभी एक सप्ताह रुक जाओ।'' हमने सोचा कि शायद यह ठीक होने शुरु हो जाएंगे। लेकिन निश्चित समय पर जाना ही होता है। एक सप्ताह के बाद इन्हें silent attack हुआ। महाराज जी ने इनके जाने का रास्ता सुगम कर दिया। कैंसर रोग से पीड़ित व्यक्ति अत्यधिक दुख उठाता है। हम इन्हें केवल दिखाने के लिए हस्पताल लेकर गए। केवल दस दिन हस्पताल में रहे।

जाने से दो दिन पहले मेरे पति ने बताया कि महाराज जी पूरी रात मेरे पास I.C U. में खड़े रहे। अगले दिन आई सी यू में दो–दो मिनिट के लिए हम मिलने गए तो मेरे पति ने इशारे से कहा इस तरफ हो जाओ महाराज जी खड़ें हैं। उसी दिन रात को उनकी तबीयत अचानक बिगड़ गई हम उन्हें मिल नहीं पाए।

पूर्ण विश्वास है कि महाराज जी शान्तिपूर्वक इन्हें अपने साथ ले गए। अन्त समय तक अधिक दुःख नहीं उठाया। हमें I.C U. में जाने की permission नहीं थी लेकिन महाराज जी हर पल उन के साथ थे। हमें अत्यन्त गर्व है कि हमने ऐसे तारनहार का पल्ला पकड़ा है। ■

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

सितम्बर से दिसम्बर 2016

साधना सत्संग, खुले सत्संग एवं नाम दीक्षा का विवरण

- **भरेड़ी**, हि. प्र., में 11 सितम्बर को एक दिवसीय खुला सत्संग लगा जिसमें 181 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **गुरदासपुर** में 16 से 18 सितम्बर तक खुला सत्संग लगा जिसमें 217 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **जालन्धर** में 25 सितम्बर को विशेष अमृतवाणी एवं प्रवचन के पश्चात् 198 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में 2 अक्तूबर से 11 अक्तूबर तक रामायणी सत्संग लगा।
- **जम्मू**, में 14 से 16 अक्तूबर तक खुला सत्संग लगा जिसमें 576 साधकों ने श्री रामशरणम् परिसर के अन्दर रह कर आनन्द उठाया। उसमें 258 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **पठानकोट** में 22 से 23 अक्तूबर को खुला सत्संग लगा जिसमें 400 साधकों ने श्री रामशरणम् परिसर के अन्दर रह कर आनन्द उठाया उसमें 187 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हिसार** में 6 नवम्बर को एक दिवसीय खुला सत्संग लगा जिसमें 27 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में 11 से 14 नवम्बर तक परम पूजनीय स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में साधना सत्संग लगा। 11 नवम्बर को 342 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **फाजलपुर**, कपूरथला, में 19 से 20 नवम्बर तक खुला सत्संग लगा जिसमें 206 साधकों ने श्री रामशरणम् परिसर के अन्दर रह कर आनन्द उठाया। उसमें 37 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दिल्ली**, राजेन्द्र नगर, में 25 नवम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम का आयोजन हुआ।
- **ग्वालियर** में 25 से 28 नवम्बर तक साधना सत्संग लगा जिसमें 279 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **चम्बी**, हि.प्र. में 27 नवम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें 27 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **सरदारशहर**, राजस्थान में 5 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें 521 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **होशंगाबाद**, म.प्र. में 8 से 9 दिसम्बर तक खुला सत्संग लगा जिसमें 337 साधकों ने श्री रामशरणम् परिसर के अन्दर रह कर आनन्द उठाया। उसमें 633 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **भिवानी**, हरियाणा में 10 से 11 दिसम्बर तक खुला सत्संग लगा जिसमें 26 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **सूरत**, गुजरात में 17 व 18 दिसम्बर को खुला सत्संग लगा जिसमें 192 साधकों ने श्री रामशरणम् परिसर के अन्दर रह कर आनन्द उठाया। उसमें 96 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **सुजानपुर**, पंजाब में 24 एवं 25 दिसम्बर को खुला सत्संग लगा जिसमें 196 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दिल्ली**, श्रीरामशरणम् में सितम्बर से दिसम्बर तक 195 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् की प्रगति

- **बांसगहन**, जिला रायसेन, म. प्र में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य शीघ्र पूरा होने की सम्भावना है। 22 फरवरी 2017 को श्रीरामशरणम् का विधिवत् उद्घाटन होगा। बांसगहन एक छोटा सा आदिवासी गांव है। यह भोपाल से लगभग 85 कि.मी. दूरी पर है। यह भोपाल, होशंगाबाद नैशनल हाईवे पर रोड से 8 कि.मी. अन्दर है। उद्घाटन के शुभ अवसर पर रोड से बांसगहन आने जाने के लिए अलग से वाहन व्यवस्था रहेगी।
- **जंडियालागुरु**, पंजाब में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य प्रगति पर है। इस का लैंटर पड़ गया है। ■

Sadhna Satsang (January to December 2017)

Indore	13 to 16 January	Friday to Monday
Hansi	3 to 6 February	Friday to Monday
Haridwar	7 to 12 April	Friday to Wednesday
Haridwar	30 June to 3 July	Friday to Monday
Haridwar	4 to 9 July	Tuesday to Sunday
Haridwar (Ramayani)	21 to 30 September	Thursday to Saturday
Haridwar	11 to 14 November	Saturday to Tuesday
Gwalior	24 to 27 November	Friday to Monday

Open Satsang (January to December 2017)

Jhabua	8 to 10 January	Sunday to Tuesday
Mumbai	21 to 22 January	Saturday to Sunday
Pilibanga	28 to 29 January	Saturday to Sunday
Bhopal	10 to 12 February	Friday to Sunday
Dewas	12 February	Sunday
Bilaspur	17 to 19 February	Friday to Sunday
Nepalganj	24 February	Friday
Sirsa	25 to 26 February	Saturday to Sunday
Delhi (Holi)	11 to 13 March	Saturday to Monday
Jhabua (Maun Sadhna)	27 March to 5 April	Monday to Wednesday
Jawali	14 April	Friday
Mandi	16 April	Sunday
Bhareri	23 April	Sunday
Manali	14 to 16 June	Wednesday to Friday
Delhi	27 to 29 July	Thursday to Saturday
Rohtak	12 to 13 August	Saturday to Sunday
Rattangarh	19 to 20 August	Saturday to Sunday
Rewari	2 to 3 September	Saturday to Sunday
Gurdaspur	15 to 17 September	Friday to Sunday
Sydney	30 Sep. to 1 October	Saturday to Sunday
Jammu	13 to 15 October	Friday to Sunday
Hissar	28 to 29 October	Saturday to Sunday
Pathankot	4 to 5 November	Saturday to Sunday
Kapurthala	18 to 19 November	Saturday to Sunday
Bhiwani	9 to 10 December	Saturday to Sunday
Surat	16 to 17 December	Saturday to Sunday
Sujanpur	23 to 24 December	Saturday to Sunday

Naam Deeksha in Other Centres (January to June 2017)

Dohad, Gujarat	3 January	Tuesday
Kushalgarh	4 January	Wednesday
Partapur, Banswara (Raj.)	5 January	Thursday
Kupda, Banswara (Raj.)	6 January	Friday
Semrod, Bolasa, Jhabua (M.P.)	7 January	Saturday
Jhabua (M.P.)	8 January	Sunday
Indore	15 January	Sunday
Mumbai	22 January	Sunday
Faridabad	26 January	Thursday
Pilibanga	29 January	Sunday
Hansi	5 February	Sunday
Bhopal	12 February	Sunday
Dewas	12 February	Sunday
Bilaspur	19 February	Sunday
Bansgahan	22 February	Wednesday
Nepalganj	24 February	Friday
Sirsa	26 February	Sunday
Jawali	14 April	Friday
Mandi	16 April	Sunday
Bhareri	23 April	Sunday
Manali	16 June	Friday
Saylorsburg, USA	June	

Naam Deeksha in Shree Ram Sharnam, Delhi (January to December 2017)

22 January	Sunday	11:00 AM
26 February	Sunday	11:00 AM
26 March	Sunday	11:00 AM
30 April	Sunday	10:30 AM
21 May	Sunday	10:30 AM
9 July	Sunday	4:00 PM
6 August	Sunday	10:30 AM
10 September	Sunday	10:30 AM
8 October	Sunday	10:30 AM
12 November	Sunday	11:00 AM
3 December	Sunday	11:00 AM

Purnima (January to December 2017)

12 January	Thursday
10 February	Friday
12 March	Sunday
11 April	Tuesday
10 May	Wednesday
9 June	Friday
9 July	Sunday
7 August	Monday
6 September	Wednesday
5 October	Thursday
4 November	Saturday
3 December	Sunday

QUIZ ON HANUMAN JI

Select the correct answers to the following questions :

Q1. What was the name of Hanuman Ji's Mother?

A. Saraswati
B. Parvati
C. Anjana
D. Lakshmi

Q2. Who reminded Hanuman Ji that he could jump over the ocean to reach Lanka?

A. Lord Rama
B. Lord Lakshmana
C. Jatayu
D. Jambavan

Q3. What was the name of the mountain on which the Sanjivani herb grew?

A. Govardhana
B. Nilgiri
C. Dronagiri
D. Himalayas

Q4. In which episode of the Hindu epic *Ramayana* does Hanuman Ji first meet Lord Ram?

A. Aranya Kanda
B. Kishkindha Kanda
C. Bal Kanda
D. Sundara Kanda

Q5. What was the name of the serpent who tried to stop Hanuman Ji from reaching Lanka?

A. Tara
B. Lankini
C. Taraka
D. Surasa

Q6. Who attacked Hanuman Ji when he tried to reach the Sun ?

A. Indra
B. Surya
C. Shiva
D. Agni

Q7. Of which God is Hanuman Ji considered the avataar ?

A. Shiva
B. Vishnu
C. Brahma
D. Rama

Q8. What present of Lord Rama does Hanuman Ji give to Maa Sita in Ashok Vatika ?

A. Earrings
B. Ring
C. Bangles
D. Necklace

Q 9. What did Hanuman Ji do with the necklace which Maa Sita presented him?

A. He broke it
B. He wore it
C. He took it home
D. He gave it to Laxmana

Q10. Who is the author of Hanuman Chalisa?

A. Saint Surdas
B. Saint Tulsidas
C. Saint Raidas
D. Saint Kabir

Answers: 1. C, 2. D, 3. D, 4. A, 5. D, 6. A, 7. A, 8. B, 9. A, 10. B

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित
एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, ए–27, नारायणा औद्यौगिक ऐरिया, फेज़ 2, नई दिल्ली 110028 से मुद्रित, संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and printed at Rave Scans Private Limited, A-27, Naraina Industrial Area, Phase 2, New Delhi 110028. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली
ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

RNI No. "Applied for".